IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित स्त्री जीवन का यथार्थ : कुसुम मेघवाल की कहानी 'अंगारा' के विशेष संदर्भ में

अमलु पी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय,कालड़ी, केरला

सार:- दलित कहानियाँ केवल दलित समाज के संघर्षों को उजागर नहीं करतीं, बल्कि उनके जीवन में आए बदलाव और सशक्तिकरण को भी प्रदर्शित करती हैं। दलित स्त्रियों की कहानियाँ उनके दोहरे संघर्ष को दिखाती हैं और समाज के सामने एक सच्चा आईना रखती हैं। इन कहानियों में न सिर्फ दर्द की अभिव्यक्ति होती है, बल्कि बदलाव की उम्मीद और ताक़त भी दिखाई देती है। डॉ. कुसुम मेघवाल की कहानियाँ दलित समाज की वास्तविकता को दिखाती हैं। लेखिका 'अंगारा' कहानी के माध्यम से 'टूटी हुई जमना' को 'रुद्र रूपी जमना' में रूपांतरित कर एक ऐसी स्त्री की छवि प्रस्तुत करती हैं, जो पीड़ा में टूटती नहीं, बल्कि उसी पीड़ा से शक्ति अर्जित कर व्यवस्था को चुनौती देती है।

कुंजी शब्द :-दलित स्त्री, दलित समाज, दलित कहानी, दलित स्त्री लेख,दलित स्त्री शोषण

दलित शब्द का अर्थ

‘दलित’ शब्द संस्कृत मूल का है ,जिसका अर्थ होता है “दबाया गया, कुचला गया” आदि। भारतीय समाज की परंपरागत जाति व्यवस्था में दलित वह वर्ग रहा है जिसे सबसे निचले स्तर पर रखा गया और जिसे अछूत माना गया। वर्तमान में ’दलित’ शब्द पर व्यापक चर्चा हो रही है। दलित, युगों-युगों से उत्पीड़ित, उपेक्षित और शोषित रहे हैं। हालाँकि आज के समय में ‘दलित’ शब्द केवल पीड़ित पहचान नहीं, बल्कि अधिकारों, समानता और आत्मसम्मान के लिए सघर्ष और जागरूकता का प्रतीक बन चुका है। दलित शब्द की व्याख्या डॉ.सोहनलाल सुमनाक्षर के अनुसार “दलित शब्द आक्रोश, चीख, वेदना, पीड़ा, चुभन, घुटन और छटपटाहट का प्रतीक हैं।”[1] वास्तव में वैदिक काल से लेकर आज तक दलितों को अनेक प्रकार की अस्पृश्यता के विशेषण देकर उन्हें सामाजिक दायरे से दूर रखने का प्रयास किया जाता रहा है।

दलित स्त्री जीवन का यथार्थ

भारतीय समाज में जाति और लिंग दो प्रमुख असमानता की धुरी हैं। जब कोई स्त्री दलित समुदाय से होती है, तो उसे इन दोनों स्तरों पर अन्याय, भेदभाव और शोषण का सामना करना पड़ता है। दलित स्त्री जीवन केवल पीड़ा की कहानी नहीं है, वह संघर्ष, साहस, और सशक्तिकरण का भी प्रतीक है। यह उस सामाजिक परिवर्तन का हिस्सा है जो समानता, न्याय और आत्मसम्मान की ओर समाज को ले जाता है। आज जब हम नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो उसमें दलित स्त्रियों की आवाज़ सब से मुखर और जरूरी होनी चाहिए, क्योंकि जब सबसे हाशिए की स्त्री सशक्त होगी, तभी समाज में सच्ची समानता संभव होगी।

दलित स्त्रियाँ जातिगत भेदभाव और पितृसत्ता दोनों की शिकार होती हैं। समाज उन्हें एक दलित के रूप में बहिष्कृत करता है और एक स्त्री के रूप में नियंत्रित करता है। नतीजतन, उनके जीवन में संघर्ष की परतें अधिक गहरी और जटिल होती हैं।

दलित महिलाओं पर अत्याचार के अनेक उदाहरण सामने आते हैं। वे शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण का शिकार होती हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। समाज का उच्च वर्ग उनकी असुरक्षा का कारण बनता है, वहीं न्याय व्यवस्था में उनकी पहुँच सीमित रहती है। शिक्षा, जो परिवर्तन की सबसे बड़ी कुंजी है, वह भी दलित स्त्रियों से दूर रही है। स्कूलों में भेदभाव, संसाधनों की कमी, और सामाजिक दबाव उन्हें शिक्षा से वंचित रखते हैं। हालांकि अब कुछ महिलाएँ इन बाधाओं को पार कर आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ रही हैं।

हाल के वर्षों में दलित स्त्रियों ने अपने अस्तित्व और अधिकारों की लड़ाई को तेज किया है। वे संगठित हो रही हैं, लिख रही हैं, बोल रही हैं, और आंदोलन का नेतृत्व कर रही हैं। दलित स्त्रीवाद ने मुख्यधारा के स्त्रीवाद को चुनौती देते हुए अपने अनुभवों को सामने लाया है। दलित स्त्री जीवन केवल उत्पीड़न की कहानी नहीं है, बल्कि वह सामाजिक जागरूकता, विद्रोह और बदलाव की यात्रा भी है। जब हम समाज में समानता की बात करते हैं, तब दलित स्त्रियों की आवाज़ सबसे प्रमुख और ज़रूरी हो जाती है।"आज औरत अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर प्रगति पथ पर अवश्य आगे बढ़ रही है, परंतु समानता ने अभी भी कोसों दूर है।"[2] उनका संघर्ष समाज के लिए एक आइना है, और उनकी सफलता एक प्रेरणा।

दलित कहानी

दलित साहित्य भारतीय समाज की उस हक़ीकत को उजागर करता है, जिसे मुख्यधारा के साहित्य ने लंबे समय तक नजर अंदाज किया। ये साहित्य दलित समुदाय के संघर्षों को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हुए समाज को जागरूक करने का कार्य करता है। कहानी साहित्य की एक सशक्त विधा है, जो जीवन के सत्य को उजागर करती है। गद्य की अन्य विधाओं की तरह कहानी भी रोचक और मनोरंजक विधा है। कहानीकार अपने भोगे हुए यथार्थ के साथ-साथ घटित घटनाओं और समाज की समस्याओं का चित्रण करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य समाज के लोगों को प्रेरणा देना और उनमें आत्मविश्वास तथा उत्साह का संचार करना होता है। दलित

कहानी ने न केवल दलित समुदाय के संघर्षों को सामने रखा है, बल्कि उनके आत्मसम्मान, अस्मिता और अधिकारों के लिए आवाज भी उठाई है। यह कहानियाँ दलित समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अनुभवों को सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं। दलित कहानी केवल व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की जातीय और वर्णवादी मानसिकता को उजागर करने वाली विधा है। यह भारतीय समाज में व्याप्त अन्याय और भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त साहित्यिक हस्तक्षेप है। इसमें दलित समाज के संघर्ष, उनकी पीड़ा, उनकी आकांक्षाओं और उनके अधिकारों की माँग को व्यक्त किया जाता है।

दलित साहित्य में कहानियों की अपनी एक विशिष्ट भूमिका है। यह केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि जातीय वर्ण-व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध का एक प्रभावशाली माध्यम है। जब दलित लेखक अपने जीवन से उदाहरण खोजकर उन्हें साहित्य में प्रस्तुत करते हैं, तो यह न केवल समाज के लिए आईना बनता है, बल्कि वंचितों की आवाज को प्रखरता से उठाने का माध्यम भी बनता है। सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाक भौरे, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अनीता भारती, कुसुम मेघवाल, रजत रानी और शरणकुमार लिंबाले जैसे लेखकों की कहानियाँ दलित समाज की सच्चाई को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

दलित स्त्री जीवन का यथार्थ : अंगारा कहानी

समकालीन कहानियाँ समाज के बदलाव और संघर्षों को दिखाती हैं। इनमें दलित चेतना एक अहम विषय बनकर उभरी है। ये कहानियाँ न्याय और समानता के एक बेहतर भविष्य की दिशा में प्रेरणा देती हैं। डॉ. कुसुम मेघवाल की कहानियाँ दलित समाज की वास्तविकता को दिखाती हैं और समाज में सुधार की जरूरत को रेखांकित करती हैं। 'अंगारा' एक बहुचर्चित कहानी है। हरखू चमार की बेटी जमना के साथ सुमेर सिंह और उसके चाचा नत्थू सिंह ने दरिंदगी की। कहानी की शुरुआत उस क्षण से होती है, जब जमना इस पाशविक कृत्य से किसी तरह बचकर अपने घर लौटती है।

उसका शरीर घायल था, आत्मा लहूलुहान। परिवार की इज्जत को पैरों तले कुचल दिया गया था।

जमना का भाई हीरा, बहन के साथ हुए अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने का साहस करता है। वह पुलिस थाने जाकर सुमेर और नत्थू के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराता है। कानून पर उसका विश्वास था, लेकिन जल्द ही उसे यह समझ में आ जाता है कि सुमेर सिंह एक प्रभावशाली मंत्री का रिश्तेदार है, और यही कारण है कि कानून भी उसके पक्ष में खड़ा हो गया है।

अपनी बहन की बेइज्जती और कानून की इस पक्षपाती व्यवस्था के सामने हीरा खुद को असहाय महसूस करता है। लेकिन वह चुप बैठने वालों में से नहीं था। वह अपने भीतर उठती प्रतिशोध की ज्वाला को न्याय के मार्ग में बदलने का निर्णय लेता है। अब उसके जीवन का एक ही उद्देश्य है–जमना को न्याय दिलाना, चाहे इसके लिए उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े।

बलात्कार की विभीषिका से गुजरती जमना का क्रोधित स्वर व्यवस्था पर सीधा प्रहार करता है– "हमें छूते ही आप अपवित्र नहीं होते? आपकी छूत-छात और जातपात कहाँ चली गई?"[3] यह प्रश्न मात्र आक्रोश नहीं, बल्कि उस पाखंडी समाज की परतें उघाड़ता है, जहाँ दलित स्त्रियों को उनके स्त्रीत्व और जातिगत पहचान, दोनों स्तरों पर शोषण झेलना पड़ता है। लेखिका यहाँ दलित स्त्री के 'दुहरे उत्पीड़न' की पीड़ा को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। स्त्री-शरीर कोई अछूत वस्तु नहीं, बल्कि वह सत्ता और वर्चस्व की हिंसक राजनीति का शिकार है। जमना के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि बलात्कार केवल शारीरिक आक्रमण नहीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान, अस्मिता और सामाजिक पहचान पर गहरा आघात है।

पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाने के कारण सुमेर सिंह पूरे गाँव को धमकाता है, जिससे सामंती ताक़तों की जड़ें उजागर होती हैं। वहीं, हीरा अपनी बहन के अपमान का प्रतिशोध लेते हुए सुमेर सिंह को सबक सिखाता है। यह एक प्रकार का व्यक्तिगत प्रतिरोध है, जो न्यायिक प्रणाली की निष्क्रियता पर भी टिप्पणी करता है। यह देखकर

"अंगारा बनी जमना दौड़ी-दौड़ी घर में गई और कोने में पड़ी दराती उठा लाई। सरकार और पुलिस जिसे सज़ा नहीं दे पाई, उसे जमना ने दे दी। अपना प्रतोशोध पूरा किया। उसने सुमेर सिंह के पुरुषत्व के प्रतीक अंग को ही काटकर शारीर से अलग कर दिया। वह तड़प रहा था। अब उसका बचना संभव नहीं था। यदि वह बच भी जाता तो उसकी ज़िन्दगी मौत से भी बदत्तर होती। अब वह किसी अछूत गरीब लड़की की इज्जत से नहीं खेल पाएगा। उसके किए की इतनी ही सज़ा काफी थी।"[4]

क्रोध और पीड़ा से तिलमिलाई जमना जब दराती उठाकर बलात्कारी सुमेर सिंह के पुरुषत्व के प्रतीक को काटती है, तो वह केवल एक स्त्री का प्रतिशोध नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध एक उग्र प्रतिकार बन जाती है। यह कृत्य उसके भीतर जमी असहायता और अन्याय के विरुद्ध जमा आक्रोश का विस्फोट है। इस क्षण में जमना अबला नहीं, अपितु एक प्रज्वलित ज्वाला बन जाती है–वह अंगार है, जो शोषण की जड़ पर वार करती है।

जहाँ राज्य-व्यवस्था, क़ानून और पुलिस प्रशासन एक दलित स्त्री को न्याय दिलाने में असफल रहते हैं, वहाँ जमना अपने हाथों में न्याय की बागडोर थामती है। यह आत्मनिर्णय केवल व्यक्तिगत बदला नहीं, बल्कि सामाजिक सत्ता-ढांचे पर गहरी चोट है। लेखिका इस कहानी के माध्यम से 'टूटी हुई जमना' को 'रुद्र रूपी जमना' में रूपांतरित कर एक ऐसी स्त्री की छवि प्रस्तुत करती हैं, जो पीड़ा में टूटती नहीं, बल्कि उसी पीड़ा से शक्ति अर्जित कर व्यवस्था को चुनौती देती है।

निष्कर्ष

दलित कहानी भारतीय साहित्य का वह हिस्सा है, जो सामाजिक समानता और न्याय के लिए नई दिशा प्रदान करता है। यह कहानियाँ न केवल दलित समाज के संघर्ष और उनकी उपलब्धियों का दस्तावेज़ हैं, बल्कि समाज के प्रति उनकी चेतना, जागरूकता और संघर्ष की सजीव तस्वीर भी प्रस्तुत करती हैं। दलित साहित्य और कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग से हो, समानता और सम्मान का हकदार है। यह साहित्य समाज में व्याप्त भेदभाव को

समाप्त करने और एक समतावादी समाज के निर्माण की दिशा में एक मजबूत कदम है। दलित स्त्रियाँ जाति और पितृसत्ता दोनों तरह के अत्याचारों का सामना करती हैं। दलित स्त्रियों द्वारा लिखे गए लेख हमें उनके संघर्षों को समझने और उनके खिलाफ अवाज़ उठाने की प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ

1. डॉ. सोहनलाल सुमनाक्षर, दलित साहित्य और उसकी सीमाएँ, पृ.१०

2. डॉ. सुशीला टाक भौरे , समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन-२,पृ.१०५

3. डॉ.कुसुम मेघवाल 'अंगारा', दलित कहानी संचयन, संपा.रमणिका गुप्ता,पृ.१४३

4. डॉ. कुऔम मेघवाल, वही, पृ.१४५

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation